Jan 2023

Monthly Magazine
Year 8 Issue 1

Satyug

नारायण रेकी सतसंग परिवार

In Giving We Believe

सतयुग

हमारा उद्देश्य

"हर इंसान तन, मन, धन व संबंधों से स्वस्थ हो
हर घर में सुख, शांति समृद्धि हो व
हर व्यक्ति उन्नति, प्रगति व सफलता प्राप्त करे।"

वुधवार सतसंग

प्रत्येक वुधवार प्रात ११ वजे से ११.३० वजे तक

फेसवुक लाइव पर

सतसंग में भाग लेने के लिए नारायण रेकी सतसंग परिवार के फेसवुक पेज को ज्वाइन करें और सतसंग का आनंद लें।

नारायण गीत

नारायण-नारायण का उद्‌घोष जहाँ
राम राम मधुर धुन वहाँ
सबको खुशियाँ देता अपरम्पार,
जीवन में लाता सबके जो बहार
खोले, उन्नति, प्रगति, सफलता के द्वार,
बनाता सतयुग सा संसार
वो है, वो है हमारा नारायण रेकी सतसंग परिवार
हमारा एन.आर.एस.पी., प्यारा एन.आर.एस.पी.
प्यार, आदर, विश्वास बढ़ाता
रिश्तों को मजबूत बनाता, मजबूत बनाता
परोपकार का भाव जगाता
सच्चाई, नम्रता सेवा में विश्वास बढ़ाता
सत को करता अंगीकार
बनाता सतयुग सा संसार
वो है, वो है हमारा नारायण रेकी सतसंग परिवार
मुस्कान के राज बताता,
तन, मन, धन से देना सिखलाता
हमको जीना सिखलाता
घर-घर प्रेम के दीप जलाता
मन क्रम से जो हम देते वही लौटकर आता, वही लौटकर आता
बनाता सतयुग सा संसार
वो है, वो है हमारा नारायण रेकी सतसंग परिवार
एन.आर.एस.पी.,एन.आर.एस.पी.

।। 卐 ।।

पावन वाणी

प्रिय नारायण प्रेमियों,

।। नारायण नारायण ।।

आजकल वर्चुअल भवन में हो रहे कन्फेशन और कमिटमेंट के दौर में जो महत्वपूर्ण है वह है कमिटमेंट । कमिटमेंट एक वचनबद्धता है, एक प्रतिज्ञा है, एक वायदा है कि आप जो बोल रहे हैं ईमानदारी से जीवन भर उस पर कायम रहेंगे । कॉमिटमेंट ने उन लोगों के जीवन को तो सुधारा ही है, जिन्होंने कमिटमेंट लिया, साथ ही उन लोगों के जीवन को भी सुधारा है जिन्होंने इन कन्फेशन और कमिटमेंट को सुना और उनसे सीख ली ।

हज़ारों की संख्या में मौजूद लोगों के बीच अपनी गलती स्वीकार कर जब आप कमिटमेंट करते हैं तो वह कमिटमेंट एक वादा होता है स्वयं से स्वयं को अवसर देने और स्वयं को सुधारने का वादा । अपनी ही नज़रों में ऊंचा उठने का वादा, उस परम पिता नारायण से वादा कि उसने जिस मकसद से आपको इस दुनिया में भेजा है आप उस मकसद को ईमानदारी से पूरा करेंगे और एक सप्त सितारा जीवन के हकदार बनेंगे ।

अपने कमिटमेंट पर खरे उतरने के लिए एक कारगर तकनीक । घर के एक ऐसे स्थान पर अपना कमिटमेंट लिखकर टांग दें जिस पर आते-जाते आपकी निगाह पड़ती रहे । इस तरह आप अपने कमिटमेंट को बार–बार पढ़ेंगे और उसे जीवन में उतारना बहुत ही आसान हो जाएगा ।

शेष कुशल

R. Modi

-: संपादिका :-

संध्या गुप्ता

09820122502

–: प्रधान कार्यालय :–

राजस्थानी मं डल कार्या लय

बेसमेंट रजनीगं धा बिल्डिं ग, कृ ष्ण वाटिका मार्ग ,

गोकुल धाम, गोरेगां व (ई), मुं बई - ४०० ०६३.

–: क्षेत्रीय कार्यालय :–

अहमदाबाद	जैविनी शाह	:	9712945552
आगरा	अंजनामित्तल	:	9368028590
अकोला	रिया / शोभा अग्रवाल	:	9075322783/ 9423102461
अमरावती	तरुलता अग्रवाल	:	9422855590
बैंगलोर	शुभांगी अग्रवाल	:	9341402211
बैंगलोर	कनिष्का पोद्दार	:	7045589451
बड़ोदा	दीपा अग्रवाल	:	9327784837
भंडारा	गीता शारडा	:	9371323367
भीलवाड़ा	रेखा चौधरी	:	8947036241
बस्ती	पूनम गाड़िया	:	9839582411
भोपाल	रेनूगट्टानी	:	9826377979
बीना (मध्यप्रदेश)	रश्मि हुरकट	:	9425425421
बनारस	अनीता भालोटिया	:	9918388543
दिल्ली (पश्चिम)	रेनू विज	:	9899277422
दिल्ली (पूर्व)	मीनू कौशल	:	9717650598
दिल्ली (प्रीतमपुरा	मेघा गुप्ता	:	9968696600
धुले	कल्पना चौरोडिया	:	9421822478
डिब्रूगढ	निर्मलाकेडिया	:	8454875517
धनबाद	विनीता दुधानी	:	9431160611
देवरिया	ज्योति छापरिया	:	7607004420
गुवाहाटी	सरला लाहौटी	:	9435042637
गुडगाँव	शीतल शर्मा	:	9910997047
गोंदिया	पूजा अग्रवाल	:	9326811588
गाजियाबाद	करुणा अग्रवाल	:	9899026607
गोरखपुर	सविता नांगलिया	:	9807099210
हैदराबाद	स्नेहलता केडिया	:	9247819681
हरियाणा	चन्द्रकला अग्रवाल	:	9992724450
हींगन घाट	शीतल टिबरेवाल	:	9423431068
इंदौर	धनश्री शिरालकर	:	9324799502
इचलकरंजी	जयप्रकाश गोयनका	:	9422043578
जयपुर	सुनीता शर्मा	:	9828405616
जयपुर	प्रीती शर्मा	:	7877339275
जालना	रजनी अग्रवाल	:	8888882666
झुंझुनू	पुष्पा टिबरेवाल	:	9694966254
जलगाँव	कला अग्रवाल	:	9325038277
कानपुर	नीलम अग्रवाल	:	9956359597
खामगांव	प्रदीप गरोदिया	:	8149738686
कोल्हापुर	जयप्रकाश गोयनका	:	9422043578
कोलकत्ता	सी .एसंगीता चांडक	:	9330701290
कोलकत्ता	श्वेता केडिया	:	9831543533
मालेगांव	आरती चौधरी/रेखा गरोडिया		9673519641/ 9595659042
मोरबी (गुजरात)	कल्पना जोशी	:	8469927279
नागपुर	सुधा अग्रवाल	:	9373101818
नांदेड	चंदा काबरा	:	9422415436
नासिक	सुनीता अग्रवाल	:	9892344435
नवलगढ़	ममता सिंगरोडिया	:	9460844144
पिछौरा	स्मिता मुकेश भरतिया	:	9420068183
परतवाडा	राखी अग्रवाल	:	9763263911
पूना	आभा चौधरी	:	9373161261
पटना	अरबिंद कुमार	:	9422126725
पुरुलिया	मृदु राठी	:	9434012619
रायपुर	अदिति अग्रवाल	:	7898588999
रांची	आनंद चौधरी	:	9431115477
रामगढ़	पूर्वी अग्रवाल	:	9661515156
राउरकेला	उमा देवी अग्रवाल	:	9776890000
शोलापुर	सुवर्णा बल्दावा	:	9561414443
सूरत	रंजना गाडिया	:	9328199171
सीकर	सुषमा अक्षवाल	:	9320066700
सिलीगुड़ी	आकांक्षा मुंधडा	:	9564025556
विशाखापत्तनम	मंजू गुप्ता	:	9848936660
उदयपुर	गुणवंती गोयल	:	9223563020
विजयवाड़ा	किरण झंवर	:	9703933740
वर्धा	अन्नपूर्णा	:	9975388399
यवतमाल	वंदना सूचक	:	9325218899

।। ॐ ।।

संपादकीय

प्रिय पाठकों,

।। नारायण नारायण ।।

मेरी एक हेल्पर ने पिछले वर्ष अपना घर बनाने के लिए एक बड़ी धनराशि मुझसे ली, साथ ही उसने वादा किया कि वह मुझसे ली हुई धनराशि ठीक एक साल बाद लौटा देंगी। पूरे साल भर उसके परिवार को बहुत ही विपरीत परिस्थितियों का सामना करना पड़ा। जिनको ध्यान में रख कर मैं यह मानकर चल रही थी कि इतनी बड़ी मात्रा में उसका धन का इनवेस्टमेंट हो रहा है तो उसके लिए मेरी धनराशि लौटाना संभव नहीं होगा। मैंने मन ही मन यह भी सोच लिया था कि मैं उससे धनराशि वापस नहीं माँगूंगी, उसके पास जब व्यवस्था होगी तब वह मुझे लौटा देगी।

मेरे आश्चर्य का ठिकाना न रहा जब उसने विपरीतता के बावजूद मेरे हाथ पर ली हुई धनराशि लाकर रख दी। इतनी बड़ी धनराशि इतने इनवेस्टमेंट के बावजूद भी लौटा पाना असंभव था। मैंने आश्चर्य के साथ पूछा, 'तूने इतनी बड़ी रकम का अरेंजमेंट कैसे किया? तू मुझे बाद में भी दे सकती थी, तो वह बोली, 'मैं आपको बाद में भी दे सकती थी, पर जो वादा मैंने आपसे किया था अपने आप से किया था अगर वह पूरा न करती तो मैं अपनी ही नजरों में गलत हो जाती फिर मुझे ऊपर जाकर परमात्मा को भी तो जवाब देना है।' उसकी बातें सुनकर मेरी आँखों में अश्रु छलक आए। बातचीत में मुझे पता चला कि, उसने गांव की अपनी एक ज़मीन जो उसने अपनी बेटी के भविष्य के लिए रखी थी उसको बेच कर मुझे रकम लौटाई है। जब यह बात मैंने अपने पति को बताई तो वह भी उसकी ईमानदारी से प्रभावित हुए और उन्होंने कहा उसकी धनराशि उसे लौटा दो ताकि वह अपनी ज़मीन छुड़वा सके। वह इतने सालों से हमारे साथ है घर की मैंबर जैसी है उसके सुख दु:ख में काम आना हमारा फर्ज़ है अब उससे यह धनराशि मत लेना।

मेरी आँखें फिर छलछला आईं। बस दोस्तों और यूँ मिला सतयुग के लिए एक नया विषय — कमिटमेंट। आप सभी अपने कमिटमेंट को निभाते हुए सप्त सितारा जीवन जीते रहें इन शुभकामनाओं सहित।

आपकी अपनी
संध्या गुप्ता

अंतरर्राष्ट्रीय कार्यालय :

नेपाल	रिचा केडिया	977985-1132261
आस्ट्रेलिया	रंजना मोदी	61470045681
बैंकाक	गायत्री अग्रवाल	66897604198
कनाडा	पूजा आनंद	14168547020
दुबई	विमला पोद्दार	971528371106
शारजहा	शिल्पा मांजरे	971501752655
जकार्ता	अपेक्षा जोगनी	9324889800
लन्दन	सी.ए. अक्षता अग्रवाल	447828015548
सिंगापुर	पूजा गुप्ता	6591454445
डबलिनओहियो अमेरिका	स्नेह नारायण अग्रवाल	1-614-787-3341

आपके विचार सकारात्मक सोच पर आधारित आपके लेख, काव्य संग्रह आमंत्रित है - सतयुग को साकार करने के लिये/आपके विचार हमारे लिये मूल्यवान हैं। आप हमारी कोशिश को आगे बढ़ाने में हमारी मदद कर सकते है। अपने विचार उदगार, काव्य लेखन हमें पत्र द्वारा, ई-मेल द्वारा भेज सकते हैं।
हमारा ई-मेल है 2014satyug@gmail.com

we are on net

narayanreikisatsangparivar

YouTube @narayanreiki

प्रकाशक : नारायण रेकी सतसंग परिवार
मुद्रक : श्रीरंग प्रिन्टर्स प्रा. लि. मुंबई.
Call : 022-67847777

पिछले दिनों, वर्चुअल नारायण भवन में कन्फेशन और कमिटमेंट का जो दौर चल रहा है उसने यह एहसास दिलाया कि कन्फेशन से ज्यादा महत्वपूर्ण है कमिटमेंट । कमिटमेंट यानि प्रतिबद्धता, वचनबद्धता,- खुद से खुद का वादा । प्रतिबद्धता का अर्थ है व्यक्ति,सिद्धांत अथवा कार्य के प्रति अपना वचन देना । अपनी सामाजिक व्यवस्था के प्रति पूर्ण समर्पण के भाव एवम पूरी ऊर्जा से स्वयं को उस कार्य में समर्पित कर देना । यह ऐसा वादा है जो आप बिना किसी दबाब के उस परम पिता की उपस्थिति में करते हैं और उसे पूरी शिद्दत से निभाते हैं । एक प्रतिबद्ध व्यक्ति व्यक्तिगत रूप से अपने कार्य के प्रति पूर्णत: समर्पित होकर अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने का सर्वोत्तम प्रयास करता है । इस कार्य को वह अपना कर्तव्य समझता है । इस कमिटमेंट को निभाने के लिए हमारे भीतर एक जुनून होता है क्योंकि हम स्वयं को यह दिखाना चाहते हैं कि हम जो कहते हैं वो ही करते भी हैं क्योंकि हम उस संस्कृति के वाहक हैं जहां प्राण जाए पर वचन न जाए का जयघोष होता है ।

कमिटमेंट निभाने के लिए सर्वप्रथम आवश्यक है - दृढ़ इच्छा शक्ति । यह भाव आपको अपने किए हुए वादे को पूरा करने के लिए प्रेरित करता है और जब आप उस कार्य को पूरा करते हो तो आपके भीतर आत्मसंतुष्टि और विजय का भाव आता है । स्वयं के ऊपर उस परम पिता और अपने बुजुर्गों के आशीर्वाद का एहसास होता और यह एहसास कि वह परम पिता हर पल, हर क्षण हमारे साथ है हमें आगे बढ़ने, उन्नति करने, प्रगति करने के लिए प्रेरित करता है ।

जब आप अपने कमिटमेंट को निभाने का दृढ़ निश्चय करते हैं तो पूरी सृष्टि आपको उसे प्राप्त करने में मदद करती है । कमिटमेंट निभाते समय यह भाव होना अति आवश्यक की जब मैंने एक बार कमिटमेंट कर लिया तो मैं खुद की भी नहीं सुनता/सुनती ।

प्रतिबद्धता हमारे सामाजिक और व्यक्तिगत जीवन का एक अनिवार्य अंग है । प्रतिबद्धता को पूरा करने में कई बार प्रतिकूल परिस्थितियाँ, चुनौतियाँ आती हैं पर क्योंकि हम अपने वचन को पूरा करने के अपने वादे से बंधे होते हैं और उसे पूरा करते हैं तो हमारा यह एटीट्यूड हमें हमारे लक्ष्यों और महत्वाकांक्षाओं को पूरा करने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है ।

प्रतिबद्धता या कमिटमेंट निभाने में कई बार हमें अनुशासित होना पड़ता है कई ऐसी आदतों और विचारों को छोड़ना पड़ता है जो हमारे कमिटमेंट के आड़े आ रहीं हैं । पर अकसर यह हमारे लिए लाभदायक ही साबित होता है। उदाहरण के लिए जब हम अपने परिवार के प्रति अपनी जिम्मेदारियों को निभाने के लिए वचनबद्ध होते हैं तो हमें अपनी कई व्यक्तिगत इच्छाओं का त्याग करना पड़ सकता है, सबके लिए समय निकालना पड़ता है । पर यह सब हमें खुशी, आनंद, उत्साह प्रदान करता है क्योंकि यह हम अपनी मर्ज़ी से, अपनी खुशी से कर रहे हैं । ऐसा करना हमें अच्छा लग रहा है । यहाँ पर दीदी द्वारा दिया गया प्रकृति का सिद्धांत कार्य करता है - जो हम देते हैं वह ही लौट

कर वापस आता है और हम यह देखते हैं कि अपने कमिटमेंट को पूरा करने में हमने जो भी एफर्ट डाले वो गुणकों में हमारे पास लौट रहे हैं। जब हम प्रतिबद्ध होते हैं तो आप परिणामों पर ध्यान केंद्रित कर रहे होते हैं जो आपको आगे बढ़ने, उन्नति करने के लिए प्रेरित करता है।

अपने कमिटमेंट को पूरा करने के लिए सेल्फ इवेलयूएशन तकनीक बहुत कारगर है। हमेशा सोचें, 'अगर मैंने यह काम दो हफ़्ते पहले शुरू किया होता, तो आज तक मैं उसमें दो हफ़्ते बेहतर होता। यह वाक्य आपके जीवन में प्रेरणा का कार्य करेगा।

जीवन के हर क्षेत्र में कमिटमेंट अति आवश्यक है चाहे वह क्षेत्र फिर हमारे स्वास्थ्य से संबंधित हो, हमारे मन से संबंधित हो धन से संबंधित हो चाहे घनिष्ठ संबंधों को निभाने से संबंधित हो।

कमिटमेंट करने से पहले एक बात जो ध्यान रखना आवश्यक है वह यह कि हम पहले अपनी क्षमताओं का आंकलन कर लें क्योंकि यदि हम अपनी क्षमताओं से ज्यादा का कमिटमेंट लेते हैं तो असफलता का डर हमें सदैव डरता/सताता रहेगा और सक्षम होने के बावजूद हम अपने कमिटमेंट को निभाने में असफल रह सकते हैं।

कमिटमेंट पूरा करने के लिए आवश्यक है कि आप आलस, डर और भगोड़ेपन की आदत को तिलांजलि दे दें। पीछे हटने के सारे रास्ते जला दो – Burn Your Bridges

ज्यादातर लोग जोखिम से बचने के लिए 'बैकअप प्लान' बनाते हैं। लक्ष्य को प्राप्त करने में आने वाली मुसीबतों और प्रतिकूल परिस्थिति में 'बैकअप प्लान' आपकी सबसे बड़ी कमज़ोरी बनकर आपको लक्ष्य से भटकने के लिए मजबूर करता है। बीच रास्ते से लौटने का कोई फायदा नहीं क्योंकि लौटने पर आपको उतनी ही दूरी तय करनी पड़ेगी जितनी दूरी तय करने पर आप लक्ष्य तक पहुँच सकते हैं। जो व्यक्ति वाकई में अपना लक्ष्य प्राप्त करना चाहते हैं उनके पास किसी भी तरह का 'बैकअप प्लान' नहीं होता। सच्चे लीडर्स का लक्ष्य निश्चित होता है और वे पीछे हटने के सारे रास्ते जला देते हैं। ऐसा करके वे यह सुनिश्चित कर देते हैं कि अब भले ही कितनी भी मुसीबतें आ जाएं वे लक्ष्य की ओर आगे ही बढ़ेंगे, उनके पास पीछे हटने का कोई विकल्प नहीं।

महेश कुमार को जन्मदिन (९ जनवरी) पर सुख, शांति, सेहत, समृद्धि से भरे सप्त सितारा जीवन का नारायण आशीर्वाद !

ज्ञान मँजूषा

ज्ञान मंजूषा के इस स्तंभ में हम इस बार दो पात्रों राधिका और सुधा जी मूर्ति के साथ हाज़िर हैं जिनके माध्यम से दीदी ने जीवन के महत्वपूर्ण संदेश दिए हैं :-

हार - जीत नहीं आपका कर्म महत्वपूर्ण है

राधिका के माध्यम से राज दीदी यह संदेश दे रहे हैं। राधिका कहती है कि Specially Ladies के लिए हमारे Area में एक Organization द्वारा Pinkathon नामक Marathon रखा गया। मैंने पहले १० किलोमीटर की Marathon में Part लिया था। इस बार मैंने सहज ही Timepass के लिए Volunteer के तौर पर अपना नाम लिखा दिया। एक Blind School ने चाहा कि उनके स्कूल के बच्चे भी उस Marathon में Part लें। उन बच्चों को एक अलग ही Experience मिलेगा। उन्हें Volunteers नहीं मिल रहे थे, बहुत मुश्किल से उन्होंने हमें Approach किया। Marathon के लिए As A Volunteer मैं उस स्कूल में गई। वहां एक छोटी सी बच्ची 'जानकी' वह Marathon के बारे में जानने के लिए बहुत उत्साही थी। ज्यों ही हम आमने-सामने बैठे सबसे पहला प्रश्न उसने मुझसे पूछा, दीदी आपका Favourite Hero कौन है। Full on Excitement. अपनी स्थिति को समझ चुकी थी, पूरी परिस्थिति को स्वीकार कर चुकी थी और एकदम दोस्ताना व्यवहार, Caring स्वभाव। कुल मिलाकर उसका यह व्यक्तित्व था। हमने लगभग एक डेढ़ घंटे बातचीत की। मुझे जानकी से बहुत कुछ सीखने को मिला। कुछ देर बाद हम दौड़ने की Practice करने के लिए उसके स्कूल के Play Ground में गए। जब हम हाथ पकड़कर दौड़ना शुरू ही कर रहे थे उसने कहा कि वह पहली बार दौड़ेगी। राधिका कहती है मैं विचलित हो गई कि इतना कमज़ोर शरीर, आंखों से दिखता नहीं, ३ किलोमीटर की Marathon यह कैसे पूरी कर पाएगी..? पर उसका कहना था कि वह दौड़ कर भी दिखाएगी और जीत कर भी दिखाएगी। हमने कुछ देर Practice की फिर मैंने उसे उसके Hall में छोड़ दिया और मैं अपने घर की तरफ रवाना हुई। रास्ते भर जानकी के साथ हुई बातचीत मेरे दिमाग में घूम रही थी। इतनी विपरीत अवस्था होते हुए भी इतना उत्साह, इतना चाव उस Marathon में दौड़ने का। जितनी उत्सुक जानकी थी इस दौड़ के लिए उतनी ही Excited मैं भी थी। मुझे Marathon का अनुभव था लेकिन इस बार मुझे जानकी को Guide करना था। Pinkathon का दिन आया। हमें सुबह ७:०० बजे का समय दिया गया। मैं ६:०० बजे ही Ground पर पहुंच गई और मैंने जानकी को खोजना शुरू किया, पर जानकी मुझे कहीं भी दिखाई नहीं दी। कुछ १० मिनट बीते होंगे मुझे जानकी अपने दोस्तों के साथ, संस्था के पदाधिकारियों के साथ आती हुई दिखाई दी। मैं भागी उसके पास, मैंने अपना Introduction दिया, तुरंत ही पहचान गई। उछल पड़ी और मेरा हाथ कस कर पकड़ लिया और बोली दीदी कितनी देर में दौड़ शुरू होने वाली है। जहां से दौड़ शुरू होने वाली थी उस जगह के पास हम जाकर खड़े हो गए। ठीक ७:०० बजे सीटी बजी और वह नन्हीं परी अपनी पूरी ताकत लगाकर दौड़ना चाहती थी लेकिन मैंने उसका हाथ कसके पकड़ रखा था। मैंने उससे कहा कि पहले हम धीमे-धीमे चलेंगे ताकि लय में आ सकें फिर थोड़ी गति बढ़ाएंगे फिर दौड़ेंगे। उसने कहना माना और हमने धीमे-धीमे चलना शुरू किया। थोड़ी देर आगे बढ़ने के बाद हमने गति तेज की और उसके बाद दौड़ना शुरू किया। अंदाजन १०० मीटर ही दौड़े होंगे कि मैंने देखा जानकी की सांस फूलने लगी है, हमने गति एकदम धीमी कर दी। सांस फूलने के बावजूद जानकी रुकी नहीं लगातार आगे बढ़ रही थी और उसकी खास बात जिसने मुझे आश्चर्य में डाल दिया वह यह है कि उसके साथ जो लड़कियां थीं जानकी उन सभी का उत्साह बढ़ा रही थी Well Done, भागो,

दौड़ो, Wooooow, भागो, भागो। मुझे इतना आश्चर्य हुआ कि उसकी खुद की तो सांस फूल रही है, उससे चला भी नहीं जा रहा है और वह अपने साथियों का उत्साह बढ़ा रही है। हम बिना रुके आगे बढ़ते जा रहे थे। जब अंदाजन २०० मीटर की दौड़ अभी बाकी थी तब मैंने उसे कहा जानकी हम Finishing Point के निकट पहुंच ही चुके हैं, थोड़ी सी हिम्मत रखो हम पहुंचते नजर आएंगे। मेरा इतना सा कहना था कि उस नन्हीं परी ने पूरी ताकत और पूरी जान लगा दी और हमने Finishing Line Touch की। ज्यों ही उसे पता चला हमने Finishing Line Touch की है वह ज़ोर से उछली और पूछा, दीदी हम First आये या Second आए हैं। राधिका कहती है मेरी आंखों में आंसू आ गए। मैंने उससे कहा मेरी नन्हीं परी तुमने ३ किलोमीटर की दौड़ तय कर ली ये ही तुम्हारे लिए सबसे बड़ा Award है, पर मैं उसे निराश नहीं करना चाहती थी। मैंने उससे कहा जानकी तुम्हें Medal अवश्य मिलेगा और हां उसे Medal मिला क्योंकि बिना रुके उसने वह दूरी तय की थी। उसके साथ दो और लड़कियों को भी Medal मिला और मैंने देखा विजेता की भांति वह बहुत खुश खड़ी हुईं थीं। जब थोड़ी देर बाद उनकी Category में जो लड़कियों ने Top किया था उनका नाम Announce किया गया तब वह समझ गई कि उसने Top नहीं किया है और मैंने देखा उसने किसी भी तरह की प्रतिक्रिया व्यक्त नहीं की, वैसे ही विजेता की भांति खड़ी थी। जानकी ने कहा – तो क्या हुआ, कोई बात नहीं अगली बार मैं फिर दौडूंगी और First आऊंगी। इतना सकारात्मक भाव उसके भीतर। उसके बाद? मैंने उसे Blind School Bus में बैठा दिया और मैं ढेर सारी यादों और बातों को लेकर अपने घर की तरफ रवाना हुई। मैंने सोचा मैंने तो सहज ही Volunteer की List में अपना नाम दे दिया था, पर मैं सोच रही थी दुनिया में कैसे-कैसे लोग हैं – कितना बड़ा विचार उनके मन में आया कि विशेषकर महिलाओं के लिए यह Pinkathon का आयोजन किया जाए ताकि घर की महिलाएं Fit रहेंगी तो पूरा परिवार Fit रहेगा। इतनी ऊंची सोच और कितना Efforts डाला Blind School के पदाधिकारियों ने। जानकी इतनी विपरीत अवस्थाओं के बावजूद भी इतनी खुश थी, इतने उत्साह से भरी हुई थी, अपनी पराजय को भी खुशी के साथ स्वीकार करना - 'इस बार First नहीं आई तो क्या हुआ अगली बार करके दिखाऊंगी।' इस Pinkathon ने मुझे बहुत कुछ सिखा दिया और बहुत कुछ दे दिया।

राधिका कहती हैं ईश्वर ने मुझे इतना कुछ दे रखा है, अब जो कुछ भी मेरे पास है उसका मुझे घर परिवार के लिए और समाज के लिए सदुपयोग करना है।

आपके पास जो भी चीज अतिरिक्त है वह दूसरों को दीजिए

राज दीदी ने कहा श्रीमती मूर्ति को हम सभी बहुत अच्छे से जानते हैं, जो बहुत साधारण जीवन जीती हैं और समाज को बहुत अधिक Contribute करती हैं, विशेषकर Education के लिए। श्रीमती मूर्ति लिखती हैं कि एक दिन मैं जिन लोगों से मिली थी वह उच्च शिक्षक थे, अच्छे घरों से थे, अच्छा Package उन्हें मिल रहा था क्योंकि बहुत बड़ी कंपनी थी उनकी। श्रीमती मूर्ति आगे लिखती हैं कि उन्हें देखकर मुझे मेरा बचपन याद आ गया। मैं शेगांव, कर्नाटक में पली-बढ़ी हूं, मेरे दादाजी Retired School Teacher थे और मेरी दादी तो कभी स्कूल गई ही नहीं थीं। वे लोग कभी किसी यात्रा पर नहीं गए, कर्नाटक से बाहर ही नहीं गए। वे दोनों बहुत सीधे, सरल, मेहनती, बिना किसी से कोई उम्मीद किए मन से काम करने वाले थे। जो काम उन्होंने किया उसकी एवज में उनका नाम ना ही कभी कोई अखबार में छपा और ना ही कभी वह कोई पुरस्कार को हासिल करने के लिए Stage पर चढ़े। उनकी

खासियत थी कि हर एक व्यक्ति का ख्याल रखना लेकिन वह खुद अनदेखे रह गए।

हमारे गांव में चावल की खेती हुआ करती थी और उस चावल को जमा करने के लिए हमारे पास दो भंडार घर थे (दो गोदाम थे)। एक हमारे घर के आगे की ओर बना हुआ था तो दूसरा घर के पिछली ओर। जो घर के आगे का गोदाम था, उसमें सफेद रंग के बड़े-बड़े दानों वाले उच्च प्रजाति के चावल जमा करते और जो घर के पिछले हिस्से में गोदाम था, उसमें लाल रंग के मोटे वाले हल्की प्रजाति के चावल जमा किए जाते थे। श्रीमती मूर्ति लिखती हैं उन दिनों जात - पात की कोई व्यवस्था नहीं थी। सारे धर्म के लोग, पूरे समाज के लोग एक साथ मिलजुल कर रहते थे, शांति से रहते थे। हमारे घर में सारे दिन भिक्षा लेने वालों का तांता लगा रहता था। कभी कोई मुसलमान फकीर, हिंदू संत या कोई गरीब विद्यार्थी। उन दिनों हमारे घर में रुपया - पैसा नहीं हुआ करता था। बतौर मदद मेरे दादाजी उन्हें चावल देते थे चाहे भिक्षा में देना हो या किसी गरीब विद्यार्थी को देना हो। हमारे गोदाम का दरवाज़ा बहुत छोटा था, बड़ा व्यक्ति उसमें प्रवेश नहीं कर पाता था, उन्हें झुककर प्रवेश करना पड़ता था। मैं उन दिनों छोटी थी तो जब भी कोई भिक्षा लेने आता मेरे दादाजी मुझे बाल्टी देते और बोलते आगे के गोदाम से बढ़िया उच्च प्रजाति के सफेद चावल लाना और बता देते थे कि ये आधी भर के लाना, ये पूरी भर के लाना और फिर वह भिक्षा में दे देते थे। जिसे भिक्षा मिलती वह बोलते थे कि ईश्वर की कृपा आपके परिवार पर बनी रहे और मेरे दादाजी भिक्षा देकर बहुत खुश होते।

श्रीमती मूर्ति आगे लिखती हैं कि पूरे परिवार के लिए खाना हमेशा मेरी दादी ही बनाया करतीं थीं । जैसे ही दादी किचन में जातीं मुझे बाल्टी थमा देतीं और कहतीं पिछले गोदाम में से लाल मोटे हल्की प्रजाति वाले चावल ले आओ और हम वही खाते। काफी समय तक यह सिलसिला चलता रहा और एक दिन मैंने अपने दादा - दादी से पूछा - कि हम लोग ऐसा क्यों करते हैं..? अच्छी प्रजाति के चावल तो हम भिक्षा में देते हैं और हल्की प्रजाति के चावल हम ख़ुद खाते हैं। जो उत्तर मेरी दादी ने दिया वह मैं जीवन भर भूल नहीं सकती। मेरी दादी ने मुझसे कहा कि जब तुम्हारा मन किसी को कुछ देने का हो तो तुम्हारे पास 'जो Best है वह दो, Second Best भी नहीं। आपको अगर लगे कोई चीज़ थोड़ी सी हल्की है, १९-२० का फर्क है तो उसमें से भी जो Best है वही देना चाहिए।'

श्रीमती मूर्ति कहती हैं मेरी दादी की उम्र बहुत अधिक थी, दादी ने मुझसे कहा कि मैंने अपने जीवन में यह जाना है कि ईश्वर न तो मंदिर में रहते हैं, न मस्जिद में, न चर्च में, वह तो इंसानों में बसते हैं। आपने यदि इंसानों की सेवा कर दी तो समझो कि भगवान की सेवा कर दी। मेरे दादाजी ने वेदों और शास्त्रों के अनुसार मुझे उत्तर दिया कि जब आप किसी को भी कुछ दें तो अच्छे मन से दें, अच्छे शब्दों के साथ दान दें ताकि उसको फले। खुश होकर जरूरतमंदों को दान दें और दान देने के बाद गिनाएं नहीं। श्रीमती मूर्ति लिखती हैं कि जब मेरे दादा दादी ने मुझसे यह सब बातें कही तब मैं बहुत छोटी थी और आज जो मैं दूसरों की थोड़ी बहुत भी मदद कर पा रही हूं तो उन दो पवित्र आत्माओं की वजह से। 'यह चीजें मैंने न तो स्कूल में सीखी और न ही कॉलेज में।' श्रीमती मूर्ति की बातों से सभी को Awareness आएगी क्योंकि वह खुद दूसरों को देने में विश्वास रखती हैं।

'नारायण शास्त्र कहता है हम जितना देते जाएंगे उतना हमारे पास Multiples में आता जाएगा।'

प्रतिबद्धता और उसका महत्व

संकल्प अर्थात् किसी भी अच्छे भाव या कार्य को करने का दृढ़ निश्चय। संकल्प हमारे बाहरी व आंतरिक जगत को पुष्ट करता है जिससे आत्मबल में वृद्धि होती है । आत्मबल में पर्वत को भी डिगाने की शक्ति होती है । हर क्षेत्र में पारंगत व्यक्तियों से पूछिये तो सभी यही उत्तर देंगे कि अगर आप कुछ बनना चाहते हैं या कुछ विशेष करना चाहते हैं तो संकल्प ही प्रथम चरण है उस लक्ष्य को पाने का ।

युवाओं के लिए हर क्षेत्र में संकल्प सहायक है चाहे वो समय तालिका से बद्ध होकर पढ़ना हो, दैनिक कार्यों का निर्वहन या कोई व्यायाम का पालन। आज के परिपेक्ष में हमारे प्रधानमंत्री संकल्प शक्ति का सबसे ज्वलंत उदाहरण हैं । हर गाँव तक पक्की सड़कें, घर घर रसोई गैस, डिजिटिलाइज़ेशन, डिमोनिटीज़ेशन, जन जन को शिक्षित करना जैसे अनेकों अभियान सफलता पूर्वक पूरे हुए हैं जिसके कारण आज भारत प्रगतिशील देशों में अग्रणी है और उसका लोहा आज विश्व के शक्तिशाली देश मान रहे हैं। पूरे चौबीस घंटों में सिर्फ़ चार घंटे विश्राम करने वाले मोदी जी अपनी संकल्प शक्ति के माध्यम से अपना शत प्रतिशत देकर भारत को उन्नति प्रगति की ओर ले जा रहे हैं । हमारी गुरु राज दीदी दिन में दो बार अविरल प्रार्थना और देश विदेश में हो रहे सत्रों को अपनी संकल्प शक्ति के माध्यम से पूरा कर पा रही हैं। आइये अपने में समाहित असीम संभावित ऊर्जा को गतिज़ ऊर्जा में परिवर्तित करें, बड़े बड़े कीर्तिमान अर्जित करें और असंभव को संभव बनाएँ अपनी संकल्प शक्ति के सशक्त माध्यम से। संकल्प शक्ति को बढ़ाने का सबसे सरल उपाय है तप करना, नियमों का पालन करना और अपने आप से वचन लेना कि जो आपने सोचा हैं उसका पालन शिद्दत से करेंगे। सच कहें तो -

जितने दृढ़ आपके संकल्प होंगे, आपकी राह आसान हो जाएगी,
मंज़िल तो मिलेगी ही, आत्म शक्ति बढ़ती चली जाएगी ।

सर्वेश कुमार को जन्मदिन (१२ दिसंबर) पर सुख, शांति, सेहत,समृद्धि से भरे सप्त सितारा जीवन का नारायण आशीर्वाद ।

बच्चों की फुलवारी

हमारी सतयुग टीम ने इस बार सतयुग के इस अंक में चर्चा का एक अद्भुत विषय चुना है – प्रतिबद्धता।

हम सभी जानते हैं कि जीवन में सफल होने के लिए प्रतिबद्ध होना बहुत महत्वपूर्ण है, और जब आपके साथ जुड़ा व्यक्ति अपनी प्रतिबद्धता नहीं रखता है तो कैसा व्यवहार करते हैं। लेकिन हममें से कितने लोग हैं जो हमेशा प्रतिबद्धता पर कायम रहने की कोशिश करते हैं ? दी गई प्रतिबद्धता पर टिके ना रहना, बहाने बनाना हममें से कई लोगों की आदत है और हम अक्सर ख़ुद को सही भी साबित करते हैं।

याद रखें यूनिवर्स ने हमसे भी एक कमिटमेंट किया है। हर सुबह सूर्योदय होता है, फिर सूर्यास्त होता है। चाँद उगता है, दिन रात होता है। ऋतु का परिवर्तन, प्रकृति अपनी चाल चलती है। यदि प्रकृति की समय-सारणी में जरा सा भी परिवर्तन होता है, उदाहरण के लिए यदि वर्षा देर से हो, तो मनुष्य तुरंत प्रतिक्रिया करता है। जब प्रकृति हमें कोई बहाना नहीं देती, तो मानव जाति प्रकृति के नियमों का अनादर कैसे कर सकती है हम प्रतिबद्धता नहीं रखने के लिए कैसे बहाने दे सकते हैं?

ऑनलाइन भवन में हम बुजुर्गों और युवाओं द्वारा शेयरिंग सुनते हैं कि कैसे उन्होंने प्रतिबद्धता को बनाए रखा और कैसे ब्रह्मांड ने उन्हें जैकपॉट्स से पुरस्कृत किया।

हम व्यायाम करने का संकल्प लेते हैं, नियमित अध्ययन करने का संकल्प लेते हैं, श्रेष्ठ व्यवहार का संकल्प लेते हैं, विनम्र रहने का संकल्प लेते हैं, अनुशासित रहने का संकल्प लेते हैं, लेकिन कई बार पथ से दूर ही रह जाते हैं।हमें केवल अपने दिमाग को प्रशिक्षित करना है कि हमने जो प्रतिबद्धता ली है उसे बनाए रखें। हमारा मन चंचल होता है लेकिन एक बार जब हम अडिग होते हैं तो हमारा मन और हमारा दिल भी साथ देता है कि हम अपनी प्रतिबद्धता पर कायम रहें।

इस जनवरी हम संकल्प लें कि हम नियमित रूप से व्यायाम करेंगे, हम अपनी पढ़ाई में अनुशासित रहेंगे, हम विनम्र रहेंगे और उन सभी के प्रति अच्छे रहेंगे जो हमारे साथ रहते हैं विशेष रूप से हमारे माता-पिता और भाई-बहनों के साथ सही राह पर चलेंगे और अच्छी आदतों से अपने आप को परिपूर्ण रखेंगे। जब हम इन प्रतिबद्धताओं का पालन करते हैं, तो प्रकृति निश्चित रूप से हमें हमारे जीवन के जैकपॉट्स के लिए वह खज़ाना प्रदान करेगी जिसका हम इंतज़ार कर रहे हैं।

-

दीदी के छाँव तले

यदि हम ईमानदारी से अपने कमिटमेंट का पालन करते हैं, तो जीवन में जैकपॉट की बौछार होती है यह बात भवन में रोज़ होने वाली शेयरिंग से साबित होती है:

एक विवाहित जोड़े का कमिटमेंट : नारायण सतसंग से जुड़ कर जीवन को कैसे सुधारा, यह तो कई बार सुना। इस बार भवन में शेयरिंग के दौरान १५ सालों से अलग हो चुके विवाहित जोड़े ने शेयरिंग की, कि किस प्रकार सतसंग ने उन्हें फिर से जोड़ा और उनका जीवन ही बदल गया ।

राज – सरिता : राज –दीदी मेरी शादी को १५ साल हो गए हैं लेकिन मेरी अपनी पत्नी से बिल्कुल भी नहीं बनती थी, हम १० मिनट से ज़्यादा फ़ोन पर भी बात नहीं कर पाते थे । मेरी दुकान भी नारायण स्थिति में हो गई थी और मुझे दुकान बंद करनी पड़ी, पत्नी के गहने भी गिरवी रख कर कर्जा लेना पड़ा, जो कि मैं चुका नहीं पा रहा था। मैं दूसरे शहर रहने लगा। वहां किसी और महिला से मेरा संबंध भी हो गया था। मेरा पत्नी से तलाक़ होने को था। इसी बीच मेरी भाभी जी ने पत्नी को राज दीदी के वीडियो भेजे और उन्हें नारायण सतसंग से जोड़ा। उनके व्यवहार में बहुत बदलाव आया और परिणाम स्वरूप आज हमारा जीवन संवर गया। जो गहने गिरवी रखे थे वह ९ सालों बाद छुड़वा लिया। सब आपके सतसंग से जुड़ने के बाद ही हुआ । मेरी पत्नी सरिता भी ज़ूम से जुड़ी हुई हैं।

मेरी पत्नी से मैं सबके सामने माफ़ी मांगता हूं और आजीवन वफ़ादार रहने का वचन देता हूं।

सरिता जी – मेरे भी कुछ कन्फेशन हैं दीदी। मैं पति पर शक करती थी, नतीजा यह हुआ कि मेरा सोचा हुआ सच हो गया। पति को टौंट कसती थी। १५ साल पहले झगड़े में सिंदूर हटा दिया उसका परिणाम यह हुआ कि पति का सच्चा प्यार नहीं मिला। बेटे को कहती थी कि तुम भी अपने पिता की तरह ही फ़ोन चलाना, गुस्सा करना, अकेले रहना, और आज मेरे कहे हुए शब्द ही सच हो गए । पति को बोला कि आपके दांत टूटे हुए हैं, आज मेरे दांत हिल रहे हैं और बहुत दर्द है । ज़रा सा गुस्सा आने पर मैं तेज आवाज़ में अपशब्द बोलती थी, जिससे मेरे सबसे संबंध नारायण हेल्प हो गए । आपसे जुड़ने के बाद विचार,वाणी, व्यवहार की, ईमानदारी की साधना की और अभी विनम्रता की साधना चल रही है। परिणाम यह है कि दोनों बच्चे और पति डायरी लिखते हैं । और अगला जैकपॉट यह लगा कि मेरे पति भी ब्रह्मुहूर्त का सतसंग अटेंड करते हैं । सबसे बड़ा जैकपॉट यह लगा कि, ९ साल से मेरा सोना गिरवी था वह निकल गया । मेरे पति नारायण भवन में विश्वास नहीं करते थे तब मैंने कहा कि सिर्फ ६ दिन आप यह साधना करिए कि सिर्फ सकारात्मक शब्द ही बोलिए । मैंने डायरी लिखना शुरू किया और तीसरे ही दिन मेरा सोना मुझे वापस मिल गया । हम दोनों बहुत सुधर गए हैं, हमने सबसे माफ़ी भी मांग ली है । घर नारायण का मंदिर बन गया है । सब आपके मार्गदर्शन का परिणाम है । मैं कमिटमेंट करती हूं कि सपरिवार, आजीवन विचार,

वाणी, व्यवहार सकारात्मक ही रखेंगे।

दीदी ने ढेर सारा आशीर्वाद दिया और कहा कि इन्होंने स्वयं अपना जीवन सुधारा है, अपने आप को सुधार कर। प्रकृति ने बता दिया कि ताना मारने में ज़्यादा शक्ति है या ईमानदारी, विनम्रता में।

(कन्फेशन ज़रूरी)

मैं अपने ससुर जी को बहुत अपशब्द बोलती थी। लॉकडाउन के दौरान मैं नारायण भवन से जुड़ी और यह अहसास हुआ कि इस प्रकार कर्म बंधते हैं और उसका आजीवन भुगतान करना पड़ता है। मैंने सब भूल कर सास ससुर की सेवा करनी शुरू कर दी और विचार, वाणी, व्यवहार में सुधार किया । परिणाम यह रहा कि ससुर जी ने अपने अंतिम समय में मुझे ढेरों आशीर्वाद दिए, जिसके फलस्वरूप मुझे उम्मीद से भी बड़ी दुकान और कार मिली। दीदी, यदि आप मुझे नहीं मिले होते तो ना जाने हम अपने कर्मों के क्या परिणाम भुगत रहे होते।

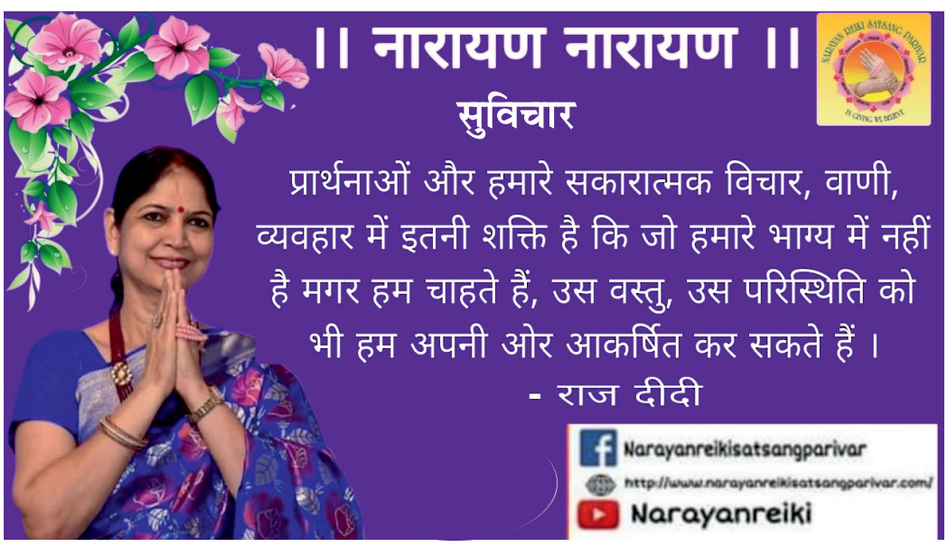

बनवारी लाल तापड़िया को जन्मदिन (२९ जनवरी) पर सुख, शांति, सेहत, समृद्धि से भरे सप्त सितारा जीवन का नारायण आशीर्वाद !

वादा निभाना होगा

कुंडनपुर में एक राजा शासन चलाता था । उसका सोच थी कि यदि कोई राजा अपनी प्रजा से मिलता है और उनकी समस्याओं का हल करता है तो वह अपनी प्रजा का प्रिय बन जाता है ।

इसके लिए वह हर सप्ताह अपने एक मंत्री के साथ मिलकर पूरे राज्य में घूमता था । घूमते समय वह लोगों की समस्याओं को सुनता था और उनका हल भी करता था । लेकिन कभी- कभी समस्या बड़ी होती थी और ऐसी होती कि उसका हल तुरंत निकाला नहीं जा सकता था । तब ऐसी स्थिति में राजा कह देता था 'ठीक है ! मैं इस समस्या के लिए कल एक सभा बुलाऊँगा।' इतना कह कर राजा आगे बढ़ जाता था ।राजा लोगों को सभा में बुलाने को तो कह देता लेकिन बाद में खुद ही व्यस्त हो जाता और समस्या के समाधान के लिए सभा नहीं बुलाता था ।

एक दिन राजा से मिलने उसका एक मित्र आया । राजा ने उसका स्वागत किया और कुछ दिनों तक अपने राज्य में अतिथि बन कर रुकने को कहा । उसके मित्र ने आमंत्रण स्वीकार किया और वह साथ ही रहने लगा । अब जब राजा अपनी प्रजा से मिलने गया तो हर बार की तरह कुछ समस्याओं का निवारण किया और कुछ के लिए सभा में बुलाने को कहा ।

यह बात मित्र को बहुत अच्छी लगी । वह सभा में राजा को समाधान करते देखने के लिए बहुत उत्सुक था क्योंकि उस दिन कुछ ऐसी समस्याएं लोगों द्वारा लायी गईं थीं जो बहुत मज़ेदार थीं और उत्सुकता बढ़ाने वाली थीं । जब अगला दिन आया तो मित्र ने राजा को सभा में चलने को कहा । राजा भी अपने मित्र के साथ सभा में गया । लेकिन यह क्या !! सभा में तो कोई भी नहीं था ।

राजा और उसका मित्र बहुत देर तक सभा में बैठे रहे लेकिन कोई नहीं आया । यह देख मित्र को आश्चर्य हुआ कि प्रजा तो हमेशा अपने राजा को देखने और मिलने के लिए उत्साहित रहती है लेकिन क्या बात है कि यहाँ कोई आया ही नहीं ।

प्रजा के न आने से राजा बहुत क्रोधित हो गया और उसने अपने सैनिकों को उन लोगों को पकड़ कर लाने के लिए कहा जिनकी समस्याएं सभा में हल होनी थीं । सैनिक तुरंत गये और उनको पकड़ कर ले आए । राजा बहुत क्रोधित होते हुए बोला ' जब तुम सभी को आज की सभा में बुलाया गया था तो तुम क्यों नहीं आये ? क्या तुम्हारे मन में मेरे लिए कोई इज्ज़त नहीं है ? तुम्हें इसकी सज़ा ज़रूर मिलेगी !'

सभी लोग चुप थे ! कोई उत्तर नहीं । अब राजा और अधिक क्रोधित हुआ । राजा को इतना क्रोधित होता देख उसका मित्र बोला ' इतना क्रोध मत करो । मैं पता लगाता हूँ कि मसला क्या है ।'

अब मित्र ने प्रजा की ओर देखा और कहा 'सभी लोग राजा से मिलने को उत्सुक रहते है और एक झलक पाने के लिए दीवाने होते हैं। तो ऐसा क्या कारण है कि राजा के बुलाने पर भी तुम लोग नहीं आये ?'कोई उत्तर नहीं मिला

।मित्र ने फिर पूछा, 'निडर होकर अपनी बात कहिए। सच बताओगे तो कोई दंड नहीं दिया जाएगा'।

अब उन में से एक बुज़ुर्ग आगे बढ़ा और बोला 'हम भी अपने राजा से मिलने के लिए उत्साहित रहते हैं और उनकी इज़्ज़त भी करते हैं । लेकिन हमारे राजा हमसे यह तो कह देते हैं कि वो सभा में समस्या हल करेंगे लेकिन कभी सभा में नहीं आते । शुरू में सभा में बहुत लोग आते थे किंतु राजा जी की अनुपस्थिति से हताश हो कर चले जाते । जब कई बार ऐसा हुआ तो प्रजा ने मान लिया कि हमारे राजा कहते तो हैं पर करते नहीं । इसलिए अब राजा के बुलाने पर भी कोई नहीं आया ।'

राजा को यह बात सुन कर अपनी ग़लतियों का एहसास हुआ । राजा समझ गया कि असली राजा वही है जो अपनी प्रजा से जो कहे वो करे, नहीं तो राजा अपनी प्रजा का विश्वास खो देता है । अब राजा ने निश्चय किया कि वह अपने किए गए वादे (commitment) पर अडिग रहेगा ।

कथनी और करनी

कई वर्षों पहले एक योद्धा (Spartan King) के सामने एक बहुत बड़ी मुसीबत आ गयी। उसे एक ऐसी सेना के साथ युद्ध करना था, जो बहुत ही शक्तिशाली थी। योद्धा के पास बहुत ही कम संसाधन और सैनिक थे जबकि विरोधी सेना के पास उनसे १० गुना ज्यादा सैनिक और हथियार थे । योद्धा ने युद्ध करने का फैसला किया और अपने सैनिकों को युद्ध के लिए तैयार होने को कहा। योद्धा ने हथियारों के साथ सैनिकों को जहाज में भरा और समुन्द्र के रास्ते दुश्मन देश की तरफ आगे बढ़ने लगे।

गतंव्य स्थल पर पहुँचने के बाद जहाज में से सारे हथियार और सैनिकों को उतारने के बाद जहाज को जलाने का आदेश दे दिया।

योद्धा ने अपने सैनिकों को संबोधित करते हुए कहा – 'आप देख रहे हैं कि सारे जहाज जला दिए गए हैं । अब हम तब तक वापस ज़िन्दा नहीं लौट सकते, जब तक कि हम जीत न जाएं। हमारे पास 'जीत' के अलावा कोई विकल्प नहीं। या तो हम जीतेंगे या फिर मरेंगे' । योद्धा की सेना ने बड़ी वीरता के साथ युद्ध किया और वे अपने से १० गुना ताकतवर दुश्मन से जीत गए। योद्धा की जीत का केवल एक ही कारण था – 'दृढ़ निश्चय'। उन्होंने पीछे हटने का कोई रास्ता नहीं छोड़ा और इसलिए वे जीत गए।

मुसीबतें आने पर आपको रास्ते बदलने की ज़रूरत होती है, लक्ष्य को बदलने की नहीं । हमें अपने वादे से कभी पीछे नहीं हटना चाहिए । हमारी कथनी करनी समान होनी चाहिए ।

॥ 卐 ॥

रोज़र बेनिस्टर

बहुत पुरानी बात है । रोज़र बेनिस्टर ब्रिटेन के एक जाने माने डॉक्टर थे मगर उन्हें दौड़ने का बहुत शौक था । जब भी उन्हें काम से वक़्त मिलता तो वे उसका अभ्यास करते ।

उन दिनों में जितने भी तेज धावक थे उन में से कोई भी एक मील की दौड़ चार मिनट से कम समय में पूरी नहीं कर पाया था ।

यह सुन कर रोज़र ने कहा ' यह असंभव नहीं है , निरंतर अभ्यास से ऐसा हो पाना संभव है !'

एक विशेषज्ञ ने कहा ' ऐसा हो पाना संभव नहीं है । इंसानी फेफड़ों में इतनी ताक़त नहीं है कि एक मील की दौड़ ४ मिनट से कम में तय की जा सके ।'

रोज़र बड़े ही दृढ़ निश्चयी थे । साहसी भी थे ।

उन्होंने विशेषज्ञ से कहा 'मैं यह कर दिखाऊँगा । बस मुझे थोड़ा वक़्त दें । देखते हैं किसकी बात सही होती है ।'

रोज़र ने अभ्यास शुरू कर दिया । उन्हें पूरा विश्वास था कि यह संभव होगा ।

फिर वह दिन आया जब उन्हें दौड़ना था । एक मील की दौड़ उन्होंने ३ मिनट ५९.४ सेकंड में पूरी की । पूरा विश्व आश्चर्यचकित था ।

डॉक्टर , प्रशिक्षक और उन सभी लोगों को उन्होंने ग़लत साबित कर दिखाया जिनके हिसाब से यह असंभव था।

सबसे ज़्यादा कमाल की बात तो यह थी कि उनके ऐसा करते ही किसी और ने उनका भी रिकॉर्ड तोड़ दिया ।

एक साल के बाद ही ३७ अन्य धावकों ने वह रेकॉर्ड भी तोड़ दिया ।

इसके बाद रोज़र को 'सर' की उपाधि से नवाज़ा गया ।

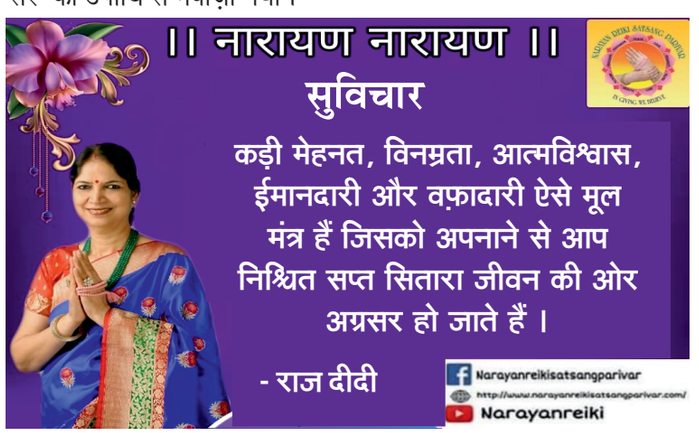

Pavaan Vani

Dear Narayan Premiyo,

|| Narayan Narayan ||

Nowadays, in this period of confession and commitment happening in virtual Narayan Bhavan, what is important, is commitment. Commitment means promise, a promise that what you are saying will be true for the rest of your life. Commitment has not only improved the lives of those who took the commitment, but also improved the lives of those who listened to these confessions and commitments and learnt from them.

When you make a commitment by accepting your mistake among the thousands of people present, then that **commitment is a promise to yourself, giving yourself an opportunity and to improve yourself. Promise to rise in your own eyes, promise to that Supreme Father, Narayan, that the purpose for which he has sent you in this world, you will fulfill that purpose honestly and will become entitled to lead a seven-star life.**

An effective technique to stay true to your commitments is to **write your commitment and hang it at such a place in the house where you can read it** while entering and going out of the house. In this way, you will read your commitment again and again and it will be very easy to follow it in life.

Rest all good,

CO-EDITOR
Deepti Shukla 09869076902

EDITORIAL TEAM
Vidya Shastry 09821327562
Mona Rauka 09821502064

Main Office
Rajasthani Mandal Office, Basement Rajnigandha Building, Krishna Vatika Marg, Gokuldham, Goregaon (East), Mumbai - 400 063.

Editorial Office
Shreyas Bunglow No 70/74 Near Mangal Murti Hospital, Gorai link Road, Borivali (W) Mumbai -92.

Regional Office

Amravati - Tarulata Agarwal	:	9422855590
Ahmedaba - C. A. Jaiwini Shah	:	9712945552
Akola - Shobha Agarwal	:	9423102461
Agra - Anjana Mittal	:	9368028590
Baroda - Deepa Agarwal	:	9327784837
Bangalore - Shubhani Agarwal	:	9341402211
Bangalore - Kanishka Poddar	:	70455 89451
Bhilwada - Rekha Choudhary	:	8947036241
Basti - Poonam Gadia	:	9839582411
Bhandra - Geeta Sarda	:	9371323367
Banaras - Anita Bhalotia	:	9918388543
Delhi - Megha Gupta	:	9968696600
Delhi - Nisha Goyal	:	8851220632
Delhi - Minu Kaushal	:	9717650598
Dhulia - Kalpana Chourdia	:	9421822478
Dibrugadh - Nirmala Kedia	:	8454875517
Dhanbad - Vinita Dudhani	:	9431160611
Devria - Jyoti Chabria	:	7607004420
Gudgaon - Sheetal Sharma	:	9910997047
Gondia - Pooja Agarwal	:	9326811588
Gorakhpur - Savita Nalia	:	9807099210
Goa - Renu Chopra	:	9967790505
Gouhati - Sarla Lahoti	:	9435042637
Ghaziabad - Karuna Agarwal	:	9899026607
Hyderabad - Snehlata Kedia	:	9247819681
Indore - Dhanshree Shilakar	:	9324799502
Ichalkaranji - Jayprakash Goenka	:	9422043578
Jaipur - Sunita Sharma	:	9828405616
Jaipur - Priti Sharma	:	7792038373
Jalgaon - Kala Agarwal	:	9325038277
Kolkatta - Sweta Kedia	:	9831543533
Kolkatta - Sangita Chandak	:	9330701290
Khamgaon - Pradeep Garodia	:	8149738686
Kolhapur - Jayprakash Goenka	:	9422043578
Latur - Jyoti Butada	:	9657656991
Malegaon - Rekha Garaodia	:	9595659042
Malegaon - Aarti Choudhari	:	9673519641
Morbi - Kalpana Joshi	:	8469927279
Nagpur - Sudha Agarwal	:	9373101818
Navalgadh - Mamta Singodhia	:	9460844144
Nanded - Chanda Kabra	:	9422415436
Nashik - Sunita Agarwal	:	9892344435
Pune - Abha Choudhary	:	9373161261
Patna - Arvindkumar	:	9422126725
Pichhora - Smita Bhartia	:	9420068183
Raipur - Aditi Agarwal	:	7898588999
Ranchi - Anand Choudhary	:	9431115477
Ramgadh - Purvi Agrwal	:	9661515156
Surat - Ranjana Agrwal	:	9328199171
Sikar - Sarika Goyal	:	9462113527
Sikar - Sushma Agrwal	:	9320066700
Siligudi - Aakaksha Mundhda	:	9564025556
Sholapur - Suvarna Valdawa	:	9561414443
Udaipur - Gunvanti Goyal	:	9223563020
Vishakhapattanam - Manju Gupta	:	9848936660
Vijaywada - Kiran Zawar	:	9703933740
vatmal - Vandana Suchak	:	9325218899

International Office

Nepal - Richa Kedia	:	+977985-1132261
Australia - Ranjana Modi	:	+61470045681
Bangkok - Gayatri Agarwal	:	0066897604198
Canada - Pooja Anand	:	+14168547020
Dubai - Vimla Poddar	:	00971528371106
Sharjah - Shilpa Manjare	:	00971501752655
Jakarta - Apkesha Jogani	:	09324889800
London - C.A. Akshata Agarwal	:	00447828015548
Singapore - Pooja Agarwal	:	+659145 4445
America - Sneha Agarwal	:	+16147873341

卐

Editorial

Dear Readers,

| | Narayan Narayan | |

Last year, one of my helpers borrowed a big amount for house construction and promised to return it after a year. For the entire year her family had to go through adverse circumstances and had to put in lot of investment, so I was assuming that it would not be possible for her to return the amount. I decided not to ask her to return the money until she has some arrangements.

I was amazed when in spite of adverse circumstances, she handed over the amount to me. To return such a big amount after so many investments was impossible.

Wondering about it, I asked, "How could you arrange for such a big amount? You could have returned it later." She replied, "I could have returned later but if I had not fulfilled the commitment, I had done with you, I could not meet my own eyes and I had to answer God in heaven too. On hearing this, tears rolled down my eyes.

During conversation, it was revealed that she sold off a property in village which she had set aside for her daughter's future. When I told this to my husband, he was very impressed with her honesty and asked me to give that amount back to her so that she could get back her land. He said that she is with us for years and is like a family member and to share her joys and sorrows is our duty.

My eyes swelled with tears. So dear friends this is how we thought of this **edition's topic —- Commitment**.

May you all live seven-star life by following your commitment, with these good wishes,

Yours own,

Sandhya Gupta

To get

important message and information from NRSP Please Register yourself on 08369501979 Please Save this no. in your contact list so that you can get all official broadcast from NRSP

we are on net

YouTube

narayanreikisatsangparivar@narayanreiki

Publisher **Narayan Reiki Satsang Parivar,**
Printer - **Shrirang Printers Pvt. Ltd.,** Mumbai.
Call : 022-67847777

Call of Satyug

In the past days, the period of confession and commitment that is going on in Virtual Narayan Bhavan, has made one realize that commitment is more important than confession. **Commitment means a resolve, a promise to oneself.** Commitment means giving your word to a person, principle or work. Dedicate yourself to that work with full energy and complete dedication towards the society. It is a promise that you make without any pressure in the presence of that Supreme Father and fulfill it with full devotion. A committed person personally dedicates himself completely to his work and tries his best to achieve his goals, he considers this work as his duty. There is a passion within us to fulfill this commitment because we want to show ourselves that we do what we say, because we are the bearers of that culture where life can be forsaken but not promise.

To fulfill the commitment, first of all it is necessary to have strong will power. This motivates you to fulfill the promise you have made and when you complete that work, you get a sense of self-satisfaction and the feel of being a winner. The blessings of the elders are felt, the feeling that the Supreme Father is with us every moment and he inspires us to move forward, experience growth and progress.

When you are determined to stick to your commitments, the entire universe helps you to achieve them. It is very important to have this feeling while making a commitment- I **have made the commitment, I will not even listen to myself.**

Commitment is an essential part of our social and personal life. Sometimes there are adverse situations, challenges in fulfilling the commitment, but because we are bound by our promise to fulfil it, this attitude of ours plays an important role in fulfilling our goals and ambitions. Many times, we have to be disciplined to fulfill the commitment or resolve, we have to leave many such habits and thoughts which are coming in the way of our commitment. This often proves beneficial for us. For example, when we are committed to fulfil our responsibilities towards our family, we may have to sacrifice many of our personal desires, find time for all. But all this gives us happiness, joy, enthusiasm because we are doing it on our own will, for our own pleasure. We feel good doing this. Here the principle of nature given by Didi works, what we give comes back to us and we see that whatever efforts we put in to fulfill our commitments are coming back to us in multiples. When you commit, you focus on results, which drives you to grow and progress.

Self-evaluation technique is very effective in meeting your commitments. Always think, 'If I had started this task two weeks ago, I would have been two weeks better at it by today. This sentence will act as an inspiration in your life.

Commitment is very important in every area of life, whether that area is related to our health, related to our mind, related to money or related to maintaining close relationships.

It is necessary to keep in mind before making a commitment that we should first assess our capabilities because if we take a commitment which is par above our capabilities, then the fear of failure will always haunt us and despite being capable, we will not be able to fulfill our commitment.

To fulfill the commitment, it is necessary that you give up the habit of laziness, fear and being fugitive. Burn the Bridges of escape.

Most people make a "backup plan" to avoid risk. The "backup plan" becomes your biggest weakness and forces you to deviate from the goal in the face of difficulties and adverse circumstances in achieving the goal. There is no use of returning midway because on returning you will have to cover the same distance as much it is needed to reach the target. People who really want to achieve their goals do not have any kind of "backup plan". True leaders have a definite goal and burn all the ways of retreat. By doing this, they make sure that no matter how many difficulties they face, they will move forward towards the goal, they have no option to back down.

Narayan blessings to Sarvesh Malpani for a seven-star life.

Narayan divine blessings with Narayan shakti to Mahesh Kumar Heda on his birthday 9th January for a seven-star life and success and happiness in all spheres.

Wisdom Box
(Glimpses of Satsang)

In this column of Gyan Manjusha, Raj Didi has conveyed her messages through stories of two prominent personalities, Radhika and Sudhaji Murthy: - T**he message is that your work is important then the criteria of winning or losing.**

Raj Didi conveyed her message through the story of Radhika. Radhika says that a marathon called Pinkathon was organized by an organization in their area especially for ladies. Radhika had previously participated in the 10-kilometer marathon. This time she simply wrote her name as a volunteer. A Blind School wanted that the children of their school, should also take part in that Marathon so that the children get a different experience. They were not getting volunteers, they approached Radhika to Volunteer for Marathon. When Radhika went to that school, she met a little girl "Janaki" she was very enthusiastic to know about Marathon. As soon as they sat, face to face, the first question, she asked Radhika was, Didi-who your favorite hero is? Janaki was full of Excitement, had understood her situation, she had accepted the whole situation and had a very friendly behavior, Caring nature.... Overall, a pleasing personality. They talked for about an hour and a half. Radhika got to learn a lot from Janaki. After some time, they went to the playground of the school to practice running. When they were about to start running while holding hands, Janaki said she would run for the first time. Radhika said that she was distraught that Janaki had such a weak body, lacking eyesight, how will she be able to complete the three-kilometer marathon?? But Janaki insisted that she would show it by running and also by winning. They practiced for some time then Radhika dropped her in the hall and left for her house. The meeting with Janaki was on her mind. So much enthusiasm, so much eagerness to run in that marathon despite being in such an adverse situation. Radhika was equally excited for this race as much as Janaki was. Radhika had the experience of Marathon but this time she had to guide Janaki. Pickathon day arrived. They were given 7:00 am time. Radhika reached the ground at 6:00 am and started searching for Janki, but she could not see Janaki anywhere. Some 10 minutes must have passed, Radhika saw Janaki coming with her friends and office bearers of the organization. Radhika ran to her, introduced herself, Janki immediately recognized her. Janaki Jumped up and held her hand tightly and said Didi, what time the race is going to start. We went and stood near the line from where the race was about to start. At 7:00 am the whistle was blown, and the little angel wanted to run with all her might but Radhika held her hand tightly. She told Janaki that first they would walk slowly to warm up, then they would increase the speed a little, then they would start running. Janaki agreed and they began walking slowly. After moving forward for a while, they increased the speed and then started running. They must have run only 100 meters when Radhika noticed that Janaki was out of breath, they slowed down the pace. Despite being out of breath, Janaki did not stop moving forward and the special thing about her was that took Radhika by surprise

was, that Janki was cheering up all the girls who were with her. Well Done, Run, Run, wow, Run, Run. Radhika was so surprised that she herself was out of breath, couldn't even walk and still she was encouraging other participants. They kept moving forward. When approximately 200 meters of the race was still left, Radhika told her that they have already reached the finishing point. Radhika just wanted to say that the little angel put in all her strength and soul and touched the finishing line. As soon as she came to know that they have touched the finishing line, she jumped loudly and asked, Didi, have we come first or second?? Radhika says tears came in her eyes. She told her, little angel, that they have completed 3-kilometer race, this is the biggest award for her. Radhika told Janaki that she would definitely get the medal and yes! Janaki got the medal because she covered that distance without any pause. Along with Janaki two other girls got medals and Radhika saw that they were standing very happy like winners. When after a while the names of the girls who had topped in her category were announced, she realized that she had not topped and Radhika saw that she did not react in any way, just standing like a winner. Janaki said – "so what, no problem, next time 'I will run and come first'. So much was the positive feeling in her. After that Radhika made her sit in the Blind School Bus and left for her home with lots of memories. Radhika thought that she had simply given her name in the list of volunteers, but she was wondering what amazing people are there in the world – What a great idea came to their mind that this Pinkathon should be arranged especially for women, If the women are fit then the whole family will be fit. The office bearers of the Blind School thought big and had put in so much effort. Janaki was so happy in spite of such adverse conditions, she was so full of enthusiasm, accepting her defeat with joy, Janaki said - "If I don't come first this time, I will show you, what I will do next time." This Pinkathon inspired Radhika a lot. Taught and gave her a lot.

Radhika says, "God has given me so much, now whatever I have, I have to make good use of it for my family and society.

Give to others whatever I have extra."

Raj Didi said we all know **Shrimati Sudha Murth**y very well, she leads a very simple life and contributes a lot to the society, especially for the education. Mrs. Murthy writes that one day the people she met were top teachers, from good homes, they were getting good packages because they belonged to a very big institution. Mrs. Murthy further writes that meeting them reminded her of her childhood. She grew up in Shegaon, Karnataka, her grandfather was a retired school teacher and her grandmother never went to school. They never went on any trip, never went outside Karnataka. Both of them were very straight forward, simple, hardworking people, with no expectations from anyone. In return of his good work, nor did Sudhaji's Grandfather's name appear in any newspaper, nor did he ever climb the stage to receive any award. His specialty was to take care of each and every person but he

himself remained unseen.

Rice was cultivated in their village, and they had two godowns to store that rice. One was built in the front of their house and the other one at the back of the house. The godown in front of the house was used to store high quality rice with large white colored grains and the godown at the back of the house was used to store inferior quality rice with thick red colored grains. Mrs. Murthy writes that in those days there was no such system of caste. People of all religions, people of the whole society lived together and lived in peace. There used to be a stream of beggars in their house all day long. Sometimes a Muslim fakir, a Hindu saint or a poor student would come asking for alms. In those days there was no money kept in their house. As a goodwill, her grandfather used to give them rice whether it was to be given in alms or to a poor student. The door of their Godown was very small, an elder person could not enter it, they had to bend down to enter. When Sudhaji was young, whenever someone used to come for alms, her grandfather would give her a bucket and tell her to bring high quality white rice from the next godown and also specify the quantity of rice to be given in alms. The one who got alms used to say "God bless your family" and Her grandfather would be very happy.

Mrs. Murthy further writes that her grandmother used to make dinner for the whole family. As soon as grandmother would go to the kitchen, she would hand over the bucket to Sudhaji and say, bring red coarse quality rice from the backside Godown and the family would eat the same. This cycle went on for a long time and one day Sudhaji asked her grandparents - 'why do we do this? We give good quality rice in alms and we eat light quality rice ourselves. 'Grandmother told her that when you want to give something to someone, then give the best you have, not even the second best. Whatever is best, should be given."

Mrs. Murthy says, her grandmother was very old. She told Sudhaji that she had come to know in her life that God does not live in temples, mosques or churches, he lives in human beings. If you have served humans, then understand that you have served God. Sudhaji's grandfather answered her according to the Vedas and Shastras that when you give something to anyone, give it with a good heart, donate it with good words so that it will be fruitful. Be happy and donate to the needy and don't count after donating. Mrs. Murthy writes that she was very young when her grandparents told her all these things and today, she is able to help others even a little because of those two holy souls. She learned these things neither in school nor in college." Mrs. Murthy's words will bring awareness to everyone because she herself believes in Giving to others.

"Narayan Shastra says that, the more we give, the more it will come to us in multiples."

॥ 卐 ॥

Youth Desk

Resolution or commitment means a firm determination to accomplish any work or objective.

Resolution nourishes our outer and inner world, due to which soul-power increases. Soul power has the ability to move mountains.

Ask experts in any field and they will answer that if you want to become something or you want to do something special, then determination is the first step to achieve that goal.

Resolution is helpful for the youth in every field, whether it is studying and abiding by the timetable, performing daily tasks or following any exercise.

In today's context, our Prime Minister is the most vivid example of power of determination. Many campaigns like metaled roads to every village, cooking gas in every house, digitization, demonetization, educating the masses have been successfully completed, due to which today India is leading among the progressive countries and today the world's powerful countries are acknowledging it.

Modi ji, who rests only for four hours in the whole twenty-four hours, is taking India towards progress by giving his 100 percent through his determination power.

Our Guru Raj Didi is able to continuously take prayers on Zoom twice a day and also the sessions happening in the country and abroad are possible through her determination power. Let's convert the infinite latent potential energy embedded in us into kinetic energy, achieve great feats and make the impossible possible through the powerful medium of our determination power. **The easiest way to increase the determination power is to do penance, follow the rules and take a self-promise that you will follow what you have resolved to do.**

Precisely -

The stronger your determination, the easier your path will be.

Easy will be the destination, self-power will reach its pinnacle.

Narayan blessings with Narayan shakti and samriddhi symbol to Ranjita Malpani Earning jackpot amount Rs three lakhs plus monthly from multiple source of income.

Children's Desk

This time our Satyug team has selected a wonderful for this issue of Satyug - Commitment and its importance.

We all know the importance of being committed, and when the person who is associated with you does not keep his commitment how bad you feel about it. How many of us stick to the commitment we make. Not to stick to the commitment, to give excuses is the trend many of us follow and we often try to prove ourselves right.

Remember, Universe has made a commitment to us too. Every morning there is Sunrise and sunset. The moon rises, day and night happen. The season's change, nature takes its course. If there is a slight change in the schedule of nature example if there is delayed rainfall, one can see the impact on mankind. When nature does not give us any excuses and the mankind disrespect the rules of nature, then will it is ok for nature to miss the schedule! Will it be acceptable? Then how can we give excuses for not keeping up our commitment.

In the online Bhawan, we hear sharing's by old and young how by keeping their commitments, they were rewarded by the universe with jackpots.

We take a commitment to exercise, we take a commitment to do regular studies, we take a commitment for good behaviour, we take a commitment to be humble, to be disciplined, but many a times we stay away from the path.

We need to train our brains to keep the commitment we have taken. Our minds flicker but once we are steadfast, our mind and our heart also cooperate in keeping our commitment.

This January let us take a commitment that we will exercise regularly, we will be disciplined in our studies, we will be humble, polite and good to all those who come in association with us especially our parents and siblings. We will tread the right path and adopt good habits.

When we follow these commitments, nature will definitely bestow us with the jackpots we are waiting for.

॥ 卐 ॥

Under The Guidance of Rajdidi

If we stick to the commitments taken by us and follow them honestly then Life showers Jackpots on us. This is proved by the daily sharing in the online Narayan Bhawan:

A commitment of a married couple : I have heard many times how by joining Narayan Reiki Satsang Parivar lives of satsangis have improved. Recently a sharing in online Narayan Bhavan by a married couple who were separated for the last 15 years and how by following the process of confession and commitment reunited them and changed their lives bewildered all.

Raj-Sarita : Raj - Didi, I have been married for the last 15 years but I did not get along with my wife, we could not even talk on the phone for more than 10 minutes. My shop was also in Narayan condition, and I had to close the shop, had to take a loan by mortgaging my wife's gold, which I was not able to repay.

I moved into another city. There I also had an extra marital relationship with another woman. I was all set to divorce my wife. Meanwhile, my sister-in-law sent Raj Didi's videos to my wife and connected her with the Narayan Reiki Satsang Parivar. There were a lot of changes in her behavior and as a result our life improved. The gold that was pledged was released after 9 years. Everything happened only after joining your satsang. My wife Sarita is also connected on with Zoom.

Sarita ji- Didi, I also have some confessions to make. I used to doubt my husband, the result was that my doubts came true. I used to taunt my husband. 15 years ago, in a quarrel between us in anger, I removed the sindoor which every Indian married lady adorns. The result of which was that I was unable to find true love. I used to say to my son that you too will also end up like your father-always on the phone, always angry, living alone and today my very own words have come true. I ridiculed my husband that he has broken teeth and today my teeth are shaking and there is a lot of pain. When I got a little angry, I used abusive language in a loud voice, due to which I lost my near and dear ones, all my relations are strained.

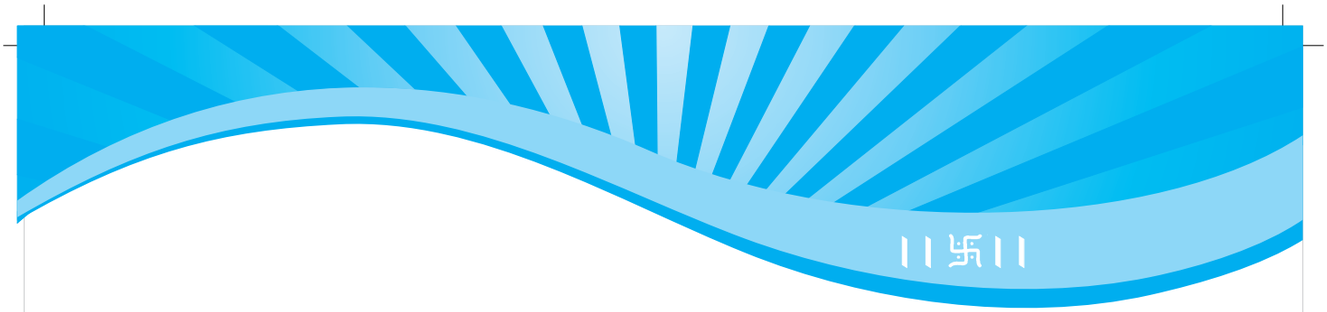

After joining your satsang and practicing the sadhana of thought, speech, behavior, honesty and now the sadhana of humility is going on. The result is that both children and the husband write diaries. And the next jackpot was that my husband also attends the Brahmuhurta satsang. The biggest jackpot was that my gold which was mortgaged for 9 years is released. My husband did not believe in Narayan Bhavan, I said that you should do this sadhana for only 6 days to d a lot, we have also apologized to everyone. The house has become the temple of Narayan. Everything is the result of your guidance. I commit that I along with my family I will keep the commitment to be steadfast in the sadspeak only positive words. I started writing a diary and on the third day I got my gold back. Both of us have improvehana of being positive in thoughts, speech and behavior throughout our lives.

Didi gave lots of blessings and said that they themselves have improved their life by improving themselves. Nature has hence proved that there is more power in honesty and humility than taunting.

Important Confession

I used to speak abusive words to my father-in-law. During lockdown, I started following Narayan Bhawan and later realized that one has to bear the consequences for lifetime. Forgetting everything, I started taking good care of my father-in-law and mother-in-law also, I improvised on my words, actions and thoughts. In the last days of my father-in-law, I nursed him whole heartedly and he blessed me in multiples. The result was, I got a car and a huge shop area, that I had never expected. If I had not met you Didi, I am afraid, what consequences we would have been bearing for the bad deeds done earlier.

Narayan divine blessings with Narayan shakti to Banwarilal Taparia on his birthday 29th January for a seven-star life and success and happiness in all spheres.

॥ 卐 ॥

Inspirational Memoirs

Promises are to be kept

A king ruled in Kundanpur. He was of the opinion that if a king meets his subjects and resolves their issues, he becomes the favorite of his subjects.

For this, he used to travel across the state every week with one of his ministers. While travelling he used meet and listen to the problems of his subjects and also used to resolve them. But sometimes the problem was big and such that it could not be solved immediately. Then in such a situation the king used to say "Okay! I will call a meeting tomorrow in the assembly." Saying this he used to go ahead. The king would have asked the people to call the assembly but later he himself would have become busy and would not attend the assembly.

One day a friend of his came to meet him. The king welcomed him and asked him to stay as a guest in his kingdom for a few days. His friend accepted the invitation and stayed with the King. Now when the king went to meet his subjects, and as usual he solved some problems and also asked the subjects to meet him in the assembly.

The Friend liked this very much. He was very eager to see the king solve the problem in the assembly because on that day the issues brought by the people were very interesting and intriguing. The next day the friend suggested that he will accompany the King to the assembly. The king also went to the meeting with his friend. But what he saw!! There was no one in the assembly!

The king and his friend sat in the assembly for a long time, but no one came. The friend was surprised to see that the people are always excited to see and meet their king, but what is the matter that no one has come here!

The king became very angry with his subjects, and he asked his soldiers to bring those people whose problems were to be resolved in the assembly.

The soldiers immediately went and caught them. The king became very angry and said, "Why didn't you come when all of you were called to today's assembly? Don't you have any respect for me? You will surely be punished for this!"

Everyone was silent! There was no answer. Now he became angrier. Seeing the king getting so angry, his friend said, "Don't be so angry. I'll find out what's the matter." Now the friend looked at the subjects and said, "Everyone is eager to meet

the king and is crazy to have a glimpse. So, what is the reason that you did not come even when the king called you?" None answered. The friend again asked, "Speak fearlessly. If you tell the truth, no punishment will be given.

One of the elders came forward and said, "We are also excited to meet our king and we also respect him. But our king tells us that he will solve the problem in the assembly but never comes to the assembly. In the beginning, many people used to come to the assembly, but due to the absence of Raja ji, they left disheartened. When this happened many times, the people accepted that our king says but does not act! That's why now no one came even when the king called.

Hearing this, the king realized his mistakes. The king understood that the real king is the one who does what he tells his subjects, otherwise the king loses the trust of his subjects. The king committed that forever he would stick to his promises.

Word and Action

Many years ago, a great difficulty came in front of a warrior (Spartan King). He had to fight an army which was very powerful. The warrior had very few resources and soldiers as compared to the opposing army which had 10 times more soldiers and weapons. The warrior decided to fight and asked his soldiers to get ready for battle. The warrior along with the soldiers and weapons embarked on the ship and started moving towards the enemy country by sea route.

After reaching the destination, after unloading all the weapons and soldiers from the ship, he ordered the ship to be burnt.

The warrior addressed his soldiers and said – "You see that all the ships have been burnt. Now we cannot go back alive until we win. We have no option but to "win". Either we will win, or we will die. The warrior's army fought with great valor and they defeated the enemy army which was 10 times stronger than them. There was only one reason for the victory of the warrior – "Determination". They left no way to retreat and hence they won.

When troubles come, you need to change your outlook, and not change the goal, we should never back down from our promise. Our words should be equal to our actions.

॥ 卐 ॥

Roger Bannister

This story is from olden times. Roger Bannister was a well-known doctor in Britain, but he was very fond of running. Whenever he got time from work, he used to practice it.

None of the fastest runners in those days could run a mile in less than four minutes.

Hearing this, Roger said, “It is not impossible, it is possible to do so with constant practice!”

An expert said “It is not possible for this to happen. Human lungs do not have enough strength to run a mile in less than 4 minutes.

Roger was very determined. He was also courageous.

He said to the expert “I will do it. But give me some time. Let’s see whose words are right.

Roger started practicing. He had full faith that this would happen.

Then the day came when they had to run. He completed the one-mile race in 3 minutes 59.4 seconds. The whole world was surprised.

He proved the doctors, coaches wrong and all the people who thought it was impossible.

The most amazing thing was that as soon as he did this, someone else broke his record.

After a year, 37 other runners broke this record as well.

After this, Roger was awarded the title of “Sir”.

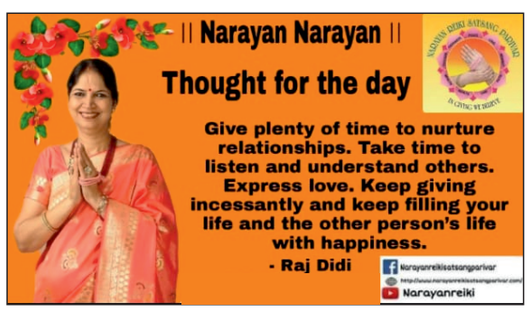

GOLDEN SIX

1) Prayer -Thank you Narayan for always being with us because of which today is the best day of our life filled with abundance of love, respect, faith care, appreciation, good news and jackpots . Thank you Narayan, for blessing us with infinite peace and energy. Narayan, Thank you for blessing us with abundant wealth which we utilize. We are lucky and blessed. With your blessings, Narayan, every person, place, thing, situation, circumstances, environment, wealth, time, transport, horoscope and everything associated with us is favourable to us. We are lucky and blessed .Thank you Narayan for granting us the boon of lifelong good health because of which we are absolutely healthy. Thank you Narayan with your blessings we are peaceful and joyous, we are positive in thoughts, words and deeds and we are successful in all spheres of life. Narayan dhanyawad.

2) Energize Vaults - Visualize a rectangular drawer in which you store your money. Visualize Rs 2000 notes stacked in a row, followed by Rs 500/- , Rs100/- , Rs 50/-, Rs20/- Rs10/- and a silver bowl with various denomination of coins. Now address the locker 'You are lucky, the wealth kept in you prospers day by day.' Request the notes "Whenever you go to somebody fulfill their requirements, bring prosperity to them and come back to me in multiples." Now say the Narayan mantra, "I love you, I like you, I respect you, Narayan Bless you" and chant Ram Ram 56

3) Shanti Kalash Meditation – Visualize a Shanti Kalash (Peace Pot) above your crown chakra. Chant the mantra" Thank You Narayan, with your blessing I am filled with infinite peace, infinite peace, infinite peace. Repeat this mantra 14 times."

4) Value Addition - Add value to cash and kind (even food items) you give to others by saying Narayan Narayan or by saying the Narayan mantra.

5) Energize Dining Table/ Office table - Visualize the dining table/ office table and energize it with Shanti symbol, LRFC Carpet, Cho Ku Rei and Lucky symbol. Give the message that all that is kept on the table turns into Sanjeevini.

6) Sun Rays Meditation - Visualize that the sun rays entering your house is bringing happiness, peace, prosperity, growth, joy, bliss, enthusiasm and health sanjeevini. Also visualize your wishes materializing. This process has to be visualized for 5 minutes.

Finest Pure Veg Hotels & Resorts

The Byke

A HOTEL RETREAT

EAT GREEN • STAY EVERGREEN

Our Hotels : Matheran | Goa | Manali | Jaipur | Thane | Puri | UPCOMING BORIVALI (Mumbai)

THE BYKE HOSPITALITY LIMITED

Shree Shakambhari Corporate Park,Plot No.156-158,

Chakravati Ashok Complex, J.B.Nagar, Andheri (East), Mumbai - 400099.

T.: +91 22 67079666 | E.: sales@thebyke.com | W.: www.thebyke.com